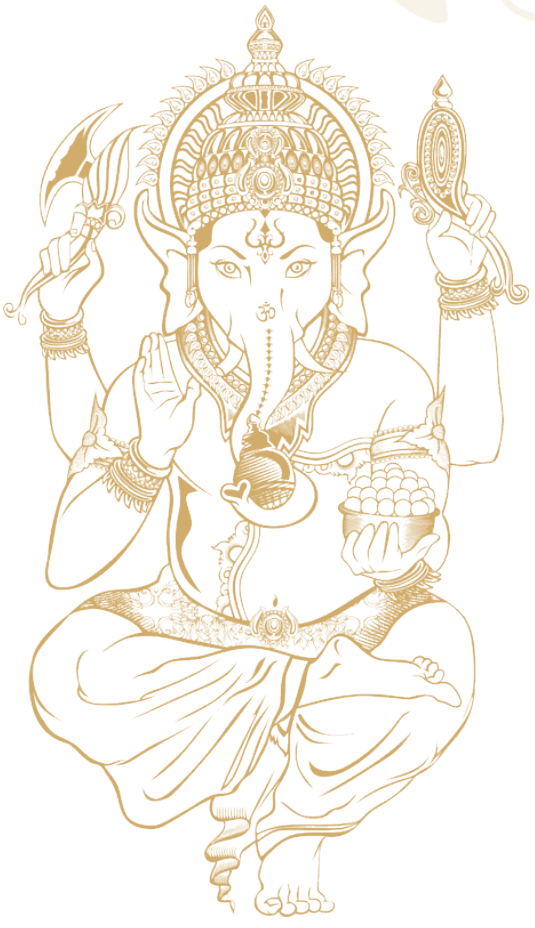

Pallavi

11 Jan 2026

02:10 AM

Bhilwara

Model: Baby-Horoscope

Order No: 120898601

तिथि 11/01/2026 **समय** 02:10:00 **वार** रविवार **स्थान** Bhilwara **चित्रपक्षीय अयनांश** : 24:13:20
अक्षांश 25:23:00 उत्तर **रेखांश** 74:39:00 पूर्व **मध्य रेखांश** 82:30:00 पूर्व **स्थानिक संस्कार** -00:31:24 घंटे

पंचांग

साम्पातिक काल	09:00:07 घं
वेलान्तर	00:07:50 घं
सूर्योदय	07:19:08 घं
सूर्यास्त	17:58:56 घं
चैत्रादि संवत	2082
शक संवत	1947
मास	माघ
पक्ष	कृष्ण
तिथि	8
नक्षत्र	चित्रा
योग	सुकर्मा
करण	कौलव

अवकहड़ा चक्र

गण	राक्षस
योनि	व्याघ्र
नाड़ी	मध्य
वर्ण	वैश्य
वश्य	मानव
वर्ग	मूषक
युँजा	मध्य
हंसक	भूमि
जन्म नामाक्षर	पो-पोशाली
पाया(रा.-न.)	लौह-रजत
होरा	शनि
चौघड़िया	काल

विंशोत्तरी

मंगल 4वर्ष 2मा 17दि

मंगल

11/01/2026
30/03/2030

	00/00/0000
	00/00/0000
	11/01/2026
शनि	29/09/2026
बुध	26/09/2027
केतु	22/02/2028
शुक्र	23/04/2029
सूर्य	29/08/2029
चन्द्र	30/03/2030

योगिनी

मंगला 0वर्ष 7मा 6दि

मंगला

11/01/2026
18/08/2026

	00/00/0000
	00/00/0000
	00/00/0000
	11/01/2026
भद्रिका	17/01/2026
उल्का	19/03/2026
सिद्धा	29/05/2026
संकटा	18/08/2026

ग्रह	व	अ	अंश	राशि	नक्षत्र	पद	स्वामी	अं.	स्थिति	षट्बल	चर	स्थिर	ग्रह तारा
लग्न			15:58:50	तुला	स्वाति	3	राहु	शुक्र	---	0:00			
सूर्य			26:23:37	धनु	पूर्वाषाढ़ा	4	शुक्र	केतु	मित्र राशि	0.77	भ्रातृ	पितृ	वध
चंद्र			28:38:21	कन्या	चित्रा	2	मंगल	शनि	मित्र राशि	1.22	आत्मा	मातृ	जन्म
मंगल		अ	26:03:17	धनु	पूर्वाषाढ़ा	4	शुक्र	केतु	मित्र राशि	0.86	मातृ	भ्रातृ	वध
बुध		अ	19:46:12	धनु	पूर्वाषाढ़ा	2	शुक्र	राहु	सम राशि	0.87	ज्ञाति	ज्ञाति	वध
गुरु	व		25:49:06	मिथु	पुनर्वसु	2	गुरु	केतु	शत्रु राशि	1.13	पुत्र	धन	विपत
शुक्र		अ	27:23:25	धनु	उत्तराषाढ़ा	1	सूर्य	चंद्र	सम राशि	1.19	अमात्य	कलत्र	मित्र
शनि			02:35:33	मीन	पू०भाद्रपद	4	गुरु	राहु	सम राशि	1.18	कलत्र	आयु	विपत
राहु	व		16:06:23	कुंभ	शतभिषा	3	राहु	शुक्र	मित्र राशि		---	ज्ञान	सम्पत
केतु	व		16:06:23	सिंह	पू०फाल्गुनी	1	शुक्र	सूर्य	शत्रु राशि		---	मोक्ष	वध

लग्न-चलित

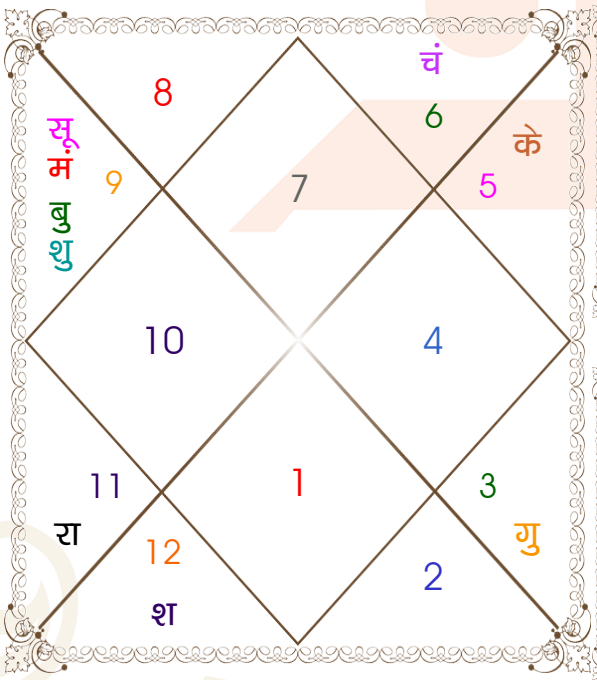

चन्द्र कुंडली

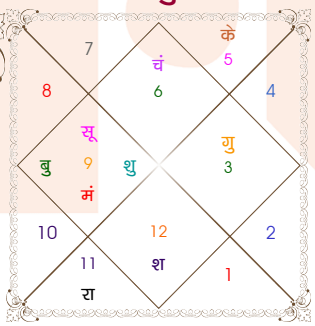

नवमांश कुंडली

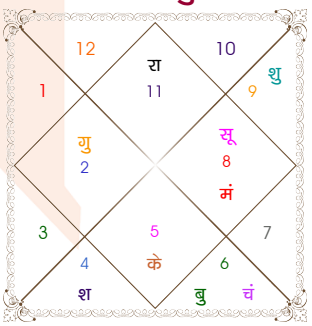

सर्वाष्टकवर्ग

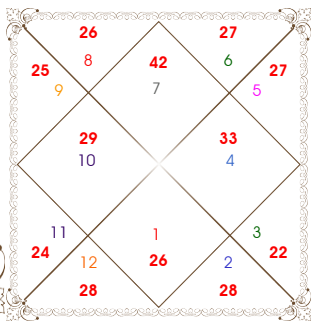

दशमांश कुंडली

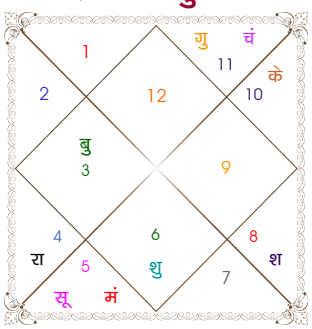

नक्षत्रफल

आपका जन्म चित्रा नक्षत्र के द्वितीय चरण में हुआ है। अतः आपकी जन्मराशि कन्या तथा राशिस्वामी बुध होगा। नक्षत्रानुसार आपकी योनि व्याघ्र, गण राक्षस, वर्ण वैश्य, वर्ग मूषक तथा नाड़ी मध्य होगी। नक्षत्र के चरणानुसार आपके नाम का आरम्भ "पो" अक्षर से होगा।

आप एक धर्मनिष्ठ महिला होंगी तथा देवता एवं ब्राहमणों के प्रति आपके मन में पूर्ण श्रद्धा एवं आदर की भावना रहेगी तथा अवसरानुकूल इसका प्रदर्शन भी करती रहेंगी। आप अपने पति एवं पुत्रों सहित हमेशा सन्तुष्ट एवं प्रसन्न रहेंगी। आपको जो प्राप्त होगा उसी का सदुप्रयोग करके जीवन सुख एवं आनन्दमय बनाएंगी। धनैश्वर्य तथा धान्य आदि का आपके पास अभाव नहीं रहेगा इनसे आप हमेशा परिपूर्ण रहेंगी।

पुत्रदारयुतसंतुष्टो धनधान्य समन्वितः।
देव ब्राह्मण भक्तश्च चित्रायां जायते नरः।।
मानसागरी

अर्थात चित्रा नक्षत्र में उत्पन्न जातक स्त्री तथा पुत्र सहित सन्तुष्ट रहने वाला, धनधान्यादि से परिपूर्ण रहने वाला तथा देवता एवं ब्राह्मणों का भक्त होता है।

नये नये वस्त्रों को धारण करने के प्रति आपका शौक रहेगा साथ ही गले में सुन्दर हार अथवा आभूषणों से भी आप सुशोभित रहेंगी। आपकी आंखे सुन्दर तथा शारीरिक सौन्दर्य मनोहर एवं आकर्षक रहेगा जिसे देखकर अन्य लोग भी आपसे शीघ्र ही प्रभावित होंगे।

चित्राम्बर माल्यधरः सुलोचनाङ्गश्च भवति चित्रायाम्।।
बृहज्जातकम्

अर्थात् चित्रा नक्षत्र में उत्पन्न जातक अनेक वस्त्र एवं मालाओं को धारण करने वाला, सुन्दर नेत्र तथा सुन्दर शरीर वाला होता है।

आपकी स्वभाव की एक विशेषता यह होगी कि आप अपने मनोभावों को हमेशा अपने ही मन में गुप्त रखेंगी तथा कभी भी किसी अन्य व्यक्ति को इसके बारे में नही बताएंगी। अपनी इस प्रवृति का आप आजीवन पालन करेंगी। समाज के सभी वर्गो के लोगों पर आपका समान रूप से प्रभाव रहेगा तथा सभी लोगों से आपको यथोचित मान सम्मान तथा आदर की प्राप्ति होगी।

चित्रायामति गुप्तशीलनिरतो मानी परस्त्रीरतः।।
जातकपरिजातः

अर्थात चित्रा नक्षत्र में उत्पन्न जातक अपने मन की बात को गुप्त रखने वाला तथा

दूसरे पर प्रकट न करने वाला ऐसे स्वभाव से युक्त, सम्माननीय तथा दूसरे की स्त्रियों में अनुरक्त रहता है।

अपने शत्रुओं का दमन करने में आप हमेशा सफल रहेंगी तथा अपने पराक्रम से उन्हे कभी भी मुँह उठाने का अवसर नहीं देंगी। साथ ही नीति शास्त्र की आप अच्छी ज्ञाता होंगी तथा नीतियों के पालन करने या करवाने में आप अत्यन्त निपुण रहेंगी। आप विभिन्न प्रकार की वेशभूषा को भी धारण करने की इच्छुक रहेंगी साथ ही शास्त्रों के ज्ञानार्जन में भी आप सफलता प्राप्त करेंगी तथा आपकी बुद्धि शास्त्रज्ञान में संलग्न रहेगी।

प्रतापसन्तापितशत्रुपक्षो नयेळतिदक्ष विचित्रवासः।
प्रसूतिकाले यदि यस्य चित्रा बुद्धिविचित्रा खलुतस्य शास्त्रे।।
जातकाभरणम्

अर्थात् चित्रा नक्षत्र में उत्पन्न मानव अपने प्रताप के द्वारा शत्रु को कष्ट पहुँचाने वाला, नीति शास्त्र में दक्ष, नाना प्रकार के वस्त्रों को धारण करने वाला तथा शास्त्रादि में अद्भुत बुद्धिवाला होता है।

आप लौहपाद में पैदा हुई हैं। यद्यपि लौहपाद में उत्पन्न जातक जीवन में विभिन्न प्रकार से रोगी, दुःखी, धन एवं सुखसंसाधनों से हीन रहकर जीवन यापन करता है परन्तु आपकी जन्म कुण्डली में चन्द्रमा शुभ राशि में स्थित है। अतः आपको अशुभ फलों की अपेक्षा शुभ फलों की ही प्राप्ति अधिक मात्रा में होगी। आपका शारीरिक स्वास्थ्य मध्यम रहेगा तथा सामान्य जीवन सुखपूर्वक व्यतीत होगा। आप एक दानशील प्रवृति की महिला होंगी तथा नित्य प्रति अपनी इस प्रवृति का अनुपालन करती रहेंगी। आप हमेशा सद्गुणों से सुसम्पन्न रहेंगी जिससे अन्य लोग आपसे प्रसन्न तथा सन्तुष्ट रहेंगे। आप शुभ एवं अच्छे कार्यों में अधिक व्यय करेंगी अनावश्यक या गलत कार्यों पर आप कभी भी व्यय नहीं करेंगी। इसके अतिरिक्त जीवन में विभिन्न प्रकार के भौतिक सुखसंसाधनों तथा विलासमय वस्तुओं से आप सुसम्पन्न रहेंगी तथा आनन्द पूर्वक इनका उपभोग करेंगी।

कन्या राशि में उत्पन्न होने के कारण आपके हाथों की लम्बाई अधिक होगी तथा शरीर एवं शरीर के अन्य अंग मुख, कान, दान्त तथा आंखे भी दर्शनीय तथा सौन्दर्य से सुशोभित रहेंगै। आप एक उच्च श्रेणी की विदुषी भी होंगी तथा कई शास्त्रों का आपको पूर्ण ज्ञान रहेगा। विभिन्न धार्मिक संस्थाओं से आपके संबंध बने रहेंगे तथा इनकी आप संचालिका या अध्यक्षा आदि उच्च पदाधिकारी होंगी। धर्म के प्रति आपके मन में असीम श्रद्धा एवं विश्वास रहेगा तथा नियमपूर्वक आप इसका पालन करेंगी। आप हमेशा मधुरता से युक्त प्रिय वाणी का उपयोग करेंगी। जिससे अन्य लोग भी आपसे प्रभावित रहेंगे साथ ही सत्य एवं शुद्धता का भी आप प्रयत्नपूर्वक पालन करेंगी। आप हमेशा धैर्य के सद्गुण से सुशोभित रहेंगी तथा सभी कार्यों को धैर्यपूर्वक सम्पन्न करने में तत्पर रहेंगी। संसार के सभी जीवों के प्रति आपके मन में करूणा तथा सहानुभूति रहेगी। आप किसी को भी दुःख नहीं देंगी तथा न देने देंगी। इसके अतिरिक्त आप अन्य लोगों की भलाई के लिए भी आजीवन प्रयत्नशील रहेंगी। साथ ही क्षमाशीलता का

भाव भी आपके हृदय में विद्यमान रहेगा। आपके पुत्रों की संख्या भी कन्याओं की संख्या से अल्प होगी।

स्त्रीलोलो लम्बबाहुर्ललिततनुमुखश्चारुदन्ताक्षिणिकर्णौ।
विद्धानाचार्य धर्मा प्रियवचनयुतः सत्यशील प्रधानः।।
धीरः सत्वानुकम्पी परविषयरतः क्षान्तिसौभाग्यभागी।
कन्याप्रायप्रसूतिबहुसुतरहितः कन्यकायां शशाङ्कः।।
सारावली

गमन करते समय आपकी दृष्टि लज्जामय तथा आलस्य युक्त होकर सुन्दर एवं आकर्षक होगी। जीवन में आप अधिकांश सुखों का ही उपभोग करेंगी दुःख अल्प मात्रा में ही सहन करने पडेंगे। आपके शरीर की लावण्यता दर्शनीय होंगी। विभिन्न प्रकार की कलाओं का आप चतुराई से प्रदर्शन करेंगी तथा इनके विषय में आपको अच्छा एवं विषद् ज्ञान रहेगा। शास्त्र तत्वों की आप ज्ञाता होंगी। तथा धर्म का नियमपूर्वक पालन करेंगी। आप किसी मित्र, संबंधी या किसी अन्य व्यक्ति के मकान एवं धनादि का भी अपने जीवन में प्रयोग कर सकेगी। विदेश जाने के लिए आप हमेशा रूचिशील रहेंगी। तथा अपने उददेश्य में अन्ततः सफलता भी प्राप्त कर सकेंगी।

व्रीळामंथरचारुवीक्षणगतिः स्रस्तांसवाहुः सुखी।
श्लक्षणः सत्यरतः कलासुनिपुणः शास्त्रार्थविद्धार्मिकः।।
मेधावी सुरतप्रियः परगृहे वितैश्च संयुज्यते।
कन्यायां परदेशगः प्रियवचः कन्याप्रजोळल्पात्मजः।।
बृहज्जातकम्

अन्य जनों को आप अपनी विशिष्ट भाव भंगिमाओं के द्वारा अपनी ओर आकृष्ट करने तथा उन्हें प्रसन्न करने में पूर्ण सफलता प्राप्त करेंगी। साथ ही वे भी आपसे हमेशा सन्तुष्ट रहेंगे। सामाजिक लोगों के साथ आपका स्वभाव अत्यन्त ही विनम्र एवं मधुर रहेगा जिससे सभी लोग आपसे प्रसन्न रहेंगे। आपकी संतति अधिक मात्रा में उत्पन्न होगी। अच्छे कार्यो को सम्पन्न करने में भी हमेशा आपकी रूचि रहेंगी। साथ ही सौभाग्य से आप हमेशा सुशोभित रहेंगी तथा अपने अधिकांश शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यो को भाग्यबल से ही जीवन में सिद्ध करेंगी।

युवतिगे शशिनि प्रमदाजनप्रबलकेलिबिलासकुतूहलैः।
विनयशील सुताजननोत्सवै सुविधिना सहितः पुभान।।
जातकाभरणम्

आपकी बुद्धि हमेशा स्वच्छ एवं निर्मलता से युक्त रहेगी तथा किसी के साथ भी आप धोखा आदि दुष्कार्यों को सम्पन्न नहीं करेंगी। आपकी रूचि तथा बुद्धि दोनो लेखन कार्य में प्रवृत रहेंगी। अतः काव्य की रचना करने में आपको सफलता प्राप्त होगी। आपके स्वभाव में चंचलता का अभाव रहेगा एवं शान्त भाव से समस्त कार्य कलापों को सम्पन्न करेंगी। आपका आचरण श्रेष्ठ होगा परन्तु यदा कदा नेत्र कष्ट से दुःख की अनुभूति करेंगी साथ ही गुरूजनों के

प्रति आपका सेवाभाव रहेगा तथा यत्नपूर्वक उनके हितकार्यों में तत्पर रहेंगी।

विमलमति सुशीलो लेखबुद्धिः कविश्च।
कृषिबलगुणशाली शान्तियुग्मः स्वभावः।।
भवति नयनरोगी धार्मिकः शीलयुक्तः।।
गुरूजन हितकर्ता कन्यका यस्य राशिः।।
जातकदीपिका

आपकी प्रकृति विलासी होगी तथा समस्त भौतिक एवं विलासमय साम्रगी से युक्त होकर प्रसन्नता पूर्वक इनका उपभोग करेंगी। सज्जन एवं विद्वान लोगों के प्रति आप हमेशा श्रद्धालु रहेंगी तथा ये लोग भी आपसे हमेशा प्रसन्न रहेंगे। आप में दानशीलता का भाव भी सर्वथा विद्यमान रहेगा तथा समयानुसार इस प्रवृति का आप पालन करती रहेंगी। वैदिक धर्म के प्रति आपकी पूर्ण निष्ठा रहेगी तथा नियमपूर्वक इसका जीवन में अनुपालन करेंगी। समाज के सभी वर्गो में आप समान रूप से लोकप्रियता प्राप्त करेंगी। अभिनय तथा संगीत की आप अत्यन्त शौकीन रहेंगी तथा आजीवन इनसे अपना संबंध बनाये रखेंगी। साथ ही विदेश में बसने की इच्छा की भी प्रबलता आपके मन में होगी।

विलासी सुजनाह्लादी सुभगो धर्मपूरितः।
दातादक्षः कविर्बुद्धि वेदमार्ग परायणः।।
सर्वलोकप्रियो नाट्यगान्धर्व व्यसने रतः।
प्रवासशीलः स्त्री दुखी कन्याजातो भवेन्नरः।।
मानसागरी

आप संसार के समस्त भौतिक पदार्थो का अपने जीवन में पूर्ण रूप से उपयोग करने में सफल होंगी। साथ ही श्रेष्ठ बुद्धि से युक्त होकर आप कई विद्याओं की ज्ञाता रहेंगी।

कन्यास्थे विषयातुरो ललितवाग्मि विद्याधिको भोगवान।
जातकपरिजातः

राक्षस गण में जन्म लेने के कारण आपकी प्रकृति कभी कभी अधिक बोलने की होगी। आपके हृदय में करूणा के भाव की अल्पता रहेगा तथा लेकिन साहस के गुण से आप हमेशा सुसम्पन्न रहेंगी तथा समस्त सांसारिक कार्यों को साहसपूर्वक सम्पन्न करेंगी। आप छोटी छोटी बातों में शीघ्र ही उत्तेजित भी हो जाएंगी। किसी भी कार्य को करने के लिए तत्पर रहेंगी। शारीरिक बल से आप युक्त रहेंगी तथा अन्य जनों से विवाद करने में भी निपुण रहेंगी।

आप उन्माद तथा प्रमेह रोग से भी व्याकुल रह सकती हैं। आपकी मुखाकृति भी सुन्दर होगी। साथ ही कभी कभी आपकी वाणी अत्यन्त ही कटु होगी जिससे अन्य लोग आपसे अप्रसन्न रहेंगे। अतः अन्यजनों से वार्तालाप के समय यत्पूर्वक आपको मधुर शब्दों का ही उपयोग करना चहिए।

अनल्पजल्पश्च कठोरचित्तः स्यात्साहसी क्रोधपरोद्धतश्च।

दुःशीलवृतः कलीकृत्वलीमान रक्षोगणोत्पन्नरो विरोधी।।
जातकभरणम्

अर्थात् राक्षस गण में उत्पन्न जातक व्यर्थ बोलने वाला, कठोर, साहसी, अकारण ही क्रोधित होने वाला, नीच प्रकृति से युक्त, झगड़ू, बलवान तथा अन्य लोगों का विरोधी होता है।

व्याघ्र योनि में जन्म लेने के कारण अन्य स्वच्छन्द प्रकृति की महिला होंगी तथा अपने समस्त कार्य कलापों को बिना किसी व्यवधान या हस्तक्षेप के करना पसन्द करेंगी। साथ ही धन संचय करने की भी आपकी प्रवृति रहेगी। आप अच्छी बातों तथा गुणों को भी शीघ्र ग्रहण करेंगी तथा अपने क्षेत्र में पूर्ण रूप से प्रशिक्षित तथा विशेषज्ञा होंगी जिससे सामाजिक जनों में आपका पूर्ण रूप से प्रभाव विद्यमान रहेगा। धनैश्वर्य से आप सर्वदा सम्पन्न रहेंगी। लेकिन आप अपने आप ही मुहँ से अपनी प्रशंसा करेंगी जिसका लोगों पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ेगा।

स्वच्छन्दोडर्थरतो ग्राही दीक्षावान सः विभुः सदा।
आत्मस्तुतिपरो नित्यं व्याघ्रयोनि भवो नरः।।
मानसागरी

अर्थात् व्याघ्र योनि में उत्पन्न जातक स्वतंत्र प्रवृति वाला, अर्थसंग्रह में तत्पर, गुणों को ग्रहण करने वाला, दीक्षित, वैभव युक्त तथा अपने ही मुख से स्वयं अपनी प्रशंसा करने वाला होता है।

आपके जन्म समय में चन्द्रमा द्वादश भाव में है। अतः आपकी माता का शारीरिक स्वास्थ्य मध्यम रहेगा तथा यदा कदा शारीरिक रूप से व्याकुलता की अनुभूति करती रहेंगी। आपके प्रति उनके मन में वात्सल्य का भाव भी विद्यमान रहेगा। साथ ही जीवन के सभी शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यों में वे आपको सहयोग तथा निर्देश देती रहेंगी। दान पुण्य संबंधी कार्य में भी आप उन्हीं का अनुसरण करेंगी।

आपका भी उनके प्रति पूर्ण सम्मान का भाव रहेगा एवं प्रायः उनकी आज्ञा का पालन करती रहेंगी परन्तु आपके परस्पर संबंध विशेष मधुर नहीं रहेंगे तथा यदा कदा किसी न किसी बात पर विवाद होता रहेगा परन्तु ये सामान्य मतभेद स्वतः समाप्त हो जाएंगे एवं सामान्य संबंध बने रहेंगे। समय ही उन्हें हमेशा अपना वांछित सहयोग प्रदान करने के लिए भी आप तत्पर रहेंगी।

आपके जन्मकाल में सूर्य तृतीय भाव में हैं अतः आपके पिता का स्वास्थ्य सामान्य रूप से अच्छा रहेगा एवं शारीरिक अस्वस्थता अल्प मात्रा में ही रहेगी। आपके प्रति उनके मन में विशेष स्नेह का भाव रहेगा तथा जीवन में शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यों में वे आपको अपना पूर्ण सहयोग अर्जित करेंगे। आपके शक्ति साहस एवं पराक्रम में वृद्धि करने के लिए वे नित्य आपको प्रोत्साहित करते रहेंगे। धन सम्पत्ति का भी उनके पास अभाव नहीं रहेगा। साथ ही वांछित आर्थिक सहायता भी आप उनसे प्राप्त करती रहेंगी।

आपके हृदय में भी उनके प्रति सम्मान का भाव रहेगा तथा अवसरानुकूल आप उनकी आज्ञा का पालन करती रहेंगी। आपके परस्पर संबंध अच्छे रहेंगे परन्तु कभी कभी मतभेद के कारण संबंधों में तनाव भी उत्पन्न होगा लेकिन यह अल्प समय के लिए ही रहेगा। इसके साथ ही जीवन में पूर्ण रूप से उनकी सेवा तथा सहयोग करना आप अपना कर्तव्य समझेंगी एवं सुख दुःख में उनका पूर्ण साथ देंगी।

आपके जन्म के समय में मंगल की स्थिति तृतीय भाव में है अतः आपके भाई बहिनों का स्वास्थ्य मध्यम रहेगा तथा शक्त, साहस एवं पराक्रम का भाव उनमें विद्यमान रहेगा। साथ ही यदा कदा शारीरिक व्याकुलता की भी उनको अनुभूति होगी। धन सम्पत्ति का उनके पास अभाव नहीं रहेगा एवं जीवन में समस्त शुभ तथा महत्वपूर्ण कार्य क्षेत्र में वे आपको अपना सहयोग प्रदान करेंगे। साथ ही सुख दुःख के समय में भी आप उनसे पूर्ण सहायता प्राप्त करेंगी।

आप भी उनके प्रति हमेशा स्नेह का भाव रखेंगी एवं उनकी अवसरानुकूल सहायता करने के लिए तत्पर रहेंगी। आपके आपसी संबंध मधुर रहेंगे परन्तु यदा कदा सैद्धान्तिक मतभेदों के कारण इसमें तनिक कटुता या तनाव भी आयेगा लेकिन कुछ समय के उपरान्त सब कुछ स्वयं ही ठीक हो जाएगा। इसके साथ ही आप उनके सुख दुःख की सहयोगी रहेंगी एवं यथाशक्ति उनको अपनी ओर से आर्थिक या अन्य प्रकार से सहयोग देती रहेंगी।

आपके लिए भाद्रपद मास, पंचमी, दशमी, पौर्णमासी तिथियां, श्रवण नक्षत्र, शुभयोग, कौलवकरण, शनिवार प्रथम प्रहर तथा वृश्चिक राशिस्थ चन्द्रमा अशुभ फल देने वाले होंगे। अतः आप 15 अगस्त से 14 सितम्बर के मध्य 5,10,15 तिथियों, श्रवण नक्षत्र, शुभयोग, कौलवकरण में कोई भी शुभकार्य व्यापार प्रांरम्भ, नवगृहनिर्माण तथा अन्य शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यो को सम्पन्न न करें अन्यथा लाभ की अपेक्षा हानि ही अधिक मात्रा में होगी। साथ ही शनिवार प्रथम प्रहर एवं वृश्चिक राशि के चन्द्रमा को भी शुभकार्यो में वर्जित रखें। इन दिनों तथा समय में शारीरिक स्वास्थ्य तथा सुरक्षा के प्रति भी विशेष ध्यान रखें।

यदि आपके लिए समय अनुकूल नहीं चल रहा हो मानसिक अशान्ति, शारीरिक व्याकुलता, व्यापार में हानि, नौकरी या पदोन्नति में व्यवधान तथा अन्य महत्वपूर्ण कार्यो में अशुभ फलों की प्राप्ति हो रही हो तो ऐसे समय में आपको अपने इष्ट देव गणेश जी की उपासना करनी चाहिए तथा बुधवार एवं गणेश चतुर्थी के उपवास करने चाहिए। साथ ही सोना, पन्ना, हरित वस्त्र, मूंग की दाल घी इत्यादि पदार्थो को श्रद्धापूर्वक किसी सुपात्र को दान करना चाहिए। इससे आपके समस्त अशुभ फल नष्ट होंगे तथा शुभ फलों की वृद्धि होकर भविष्य के लिए लाभमार्ग भी प्रशस्त होंगे। इसके अतिरिक्त बुध के तांत्रीय मंत्र के कम से कम 17000 जप किसी योग्य विद्वान से सम्पन्न करवाने चाहिए। इससे आपको मानसिक शान्ति प्राप्त होगी तथा अन्य महत्वपूर्ण कार्यों में सफलता भी प्राप्त होगी।

ऊँ ब्रां ब्रीं ब्रों सः बुधाय नमः।
मंत्र- ऊँ ऐं स्त्रीं श्रीं बुधाय नमः।